आज जब विश्व के प्रायः समस्त देश अपनी-अपनी स्वतन्त्र दिशाओं में चल निकले हैं, हम इस तमस में डूबे नहीं रह सकते। हमें अपनी सांस्कृतिक अस्मिता के स्वरूप और आज के विश्व में अपनी परिस्थिति को स्पष्टता से समझकर अपनी किसी विशिष्ट भारतीय दिशा, अपने किसी विशिष्ट भारतीय लक्ष्य का वरण करना होगा, और उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिये एकदा पुनः राष्ट्रव्यापी आत्मविश्वास एवं दृढ सङ्कल्प जागृत करना होगा।

समाजनीति समीक्षण केन्द्र की स्थापना राष्ट्रीय अस्मिता के जागरण एवं आज के विश्व में विशिष्ट भारतीय दिशा के निर्धारण के इस कार्य में सहाई होने के उद्देश्य से की गयी है। केन्द्र ऐसी सार्वजनिक नीतियों के अन्वेषण में भी प्रयासरत है जिन पर चलते हुए देश के समस्त लोग राष्ट्र निर्माण के कार्य में भागी हो पायें और उन सब के सम्मिलित उत्साह एवं ओज से यह राष्ट्र ओजस्वी हो।

केन्द्र के अन्य प्रकाशन हैं --

भारतीय चित्त मानस एवं काल, १९९३, हिन्दी एवं अङ्ग्रेजी में।

अयोध्या एण्ड द फ्यूचर इण्डिया, १९९३, अङ्ग्रेजी में।

इण्डियन एकानामी एण्ड पालिटी, १९९५, अङ्ग्रेजी में।

प्रस्तुत पुस्तक अङ्ग्रेजी एवं तमिल में भी प्रकाशित की जा रही है।

मूल्यः ४००/- रुपये
आई एस बी एन *Centre for Policy Studies*

अन्नं बहु कुर्वीत

अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान के सनातन भारतीय धर्म का अनुस्मरण

जितेन्द्र बजाज
मण्डयम् दोड्डमने श्रीनिवास

सहज सस्यप्रबहुला भारतभूमि आज अन्नाभाव एवं व्यापक क्षुधा से त्रस्त है। ब्रितानी प्रशासन के इस भूमि पर पाँव धरते ही जो अकाल यहाँ व्यापने लगा था उस अकाल से हम अभी उबर नहीं पाये।

आज हमारे यहा अनाज एवं खाने योग्य कन्दो का उत्पादन इतने अल्प परिणाम में होता है कि हम इस उपज में से पशुओं के लिये किञ्चित् भाग भी नहीं निकाल पाते, और सम्पूर्ण उपज के मानवीय उपभोग को समर्पित कर दिये जाने के उपरान्त भी भारतीय जन के मुख्य भोजन की माध्य मात्रा विश्व-भर के लोगों के मुख्य भोजन की सामान्य मात्रा से एक-तिहाई अल्प बैठती है। भारतदेश के लोग एवं पशु दोनों ही भूखे हैं। परन्तु उनकी क्षुधा के प्रति भारतवर्ष के हम समस्त सक्षम-सम्भ्रान्त जनों ने असम्पृक्त-सा भाव अपना लिया है।

भारतभूमि ऐसी अभावग्रस्त तो कभी नहीं हुआ करती थी, न ही अन्यों की क्षुधा के प्रति हम कभी ऐसे असम्पृक्त हुआ करते थे। भारतवर्ष में तो सर्वदा यह माना जाता रहा है कि बहुमात्रा में अन्न उपजाना और उपजाये अथवा पकाये गये अन्न का व्यापक-उदार संविभाग करने के उपरान्त ही उपभोग की ओर प्रवृत्त होना मानवीय जीवन का मौलिक अनुशासन है। अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान मानवीय जीवन का मूलभूत एवं सनातन धर्म हैं। समस्त धर्मसम्मत एषणाओं की ओर प्रवृत्ति अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान के इस सुस्थिर आधार पर स्थित होकर ही सम्भव होती है। यहाँ तक कि मोक्ष की साधना भी इसी आधारभूत धर्म के सम्यक् निर्वाह से ही प्रारम्भ होती है।

इस पुस्तक में श्रुति, स्मृति, इतिहास एवं पुराण का अवलम्बन लेकर अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान के इस सनातन भारतीय धर्म के अनुस्मरण का प्रयास किया गया है। आशा है कि यह पुस्तक राष्ट्र का ध्यान अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान के मौलिक धर्म पर केन्द्रित करने में सहायक होगी।

प्रकाशन से पूर्व यह पुस्तक भारत के अनेक प्रमुख धर्माचार्यों के चरणों पर समर्पित की गयी है। निम्नलिखित आचार्यों ने इस पुस्तक को अपने आशीर्वाद से गौरवान्वित किया है –

श्री जगद्गुरु शृङ्गेरी श्रीमद्भारतीतीर्थमहास्वामीजी
श्री कलियन् वानमामलै रामानुज जीयर् स्वामिगल्
जगद्गुरु श्रीशङ्कराचार्य श्रीनिश्चलानन्द सरस्वती महाराज
श्री श्री त्रिदण्डी श्रीमन्नारायण रामानुज जीयर् स्वामीजी
श्री पेजावर अधोक्षज मठाधीश श्री विश्वेशतीर्थ स्वामीजी
विरक्त शिरोमणि परमहंस श्री स्वामी वामदेवजी महाराज
श्रीकाञ्चीकामकोटि शङ्कराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती स्वामिगल्

समाजनीति समीक्षण केन्द्र, मद्रास
आई एस बी एन ८१-८६०४१-०६-०

अन्नं बहु कुर्वीत :
सनातन भारतीय धर्म का अनुस्मरण
अन्नबाहुल्य एवं अन्नदान के

बजाज
श्रीनिवास

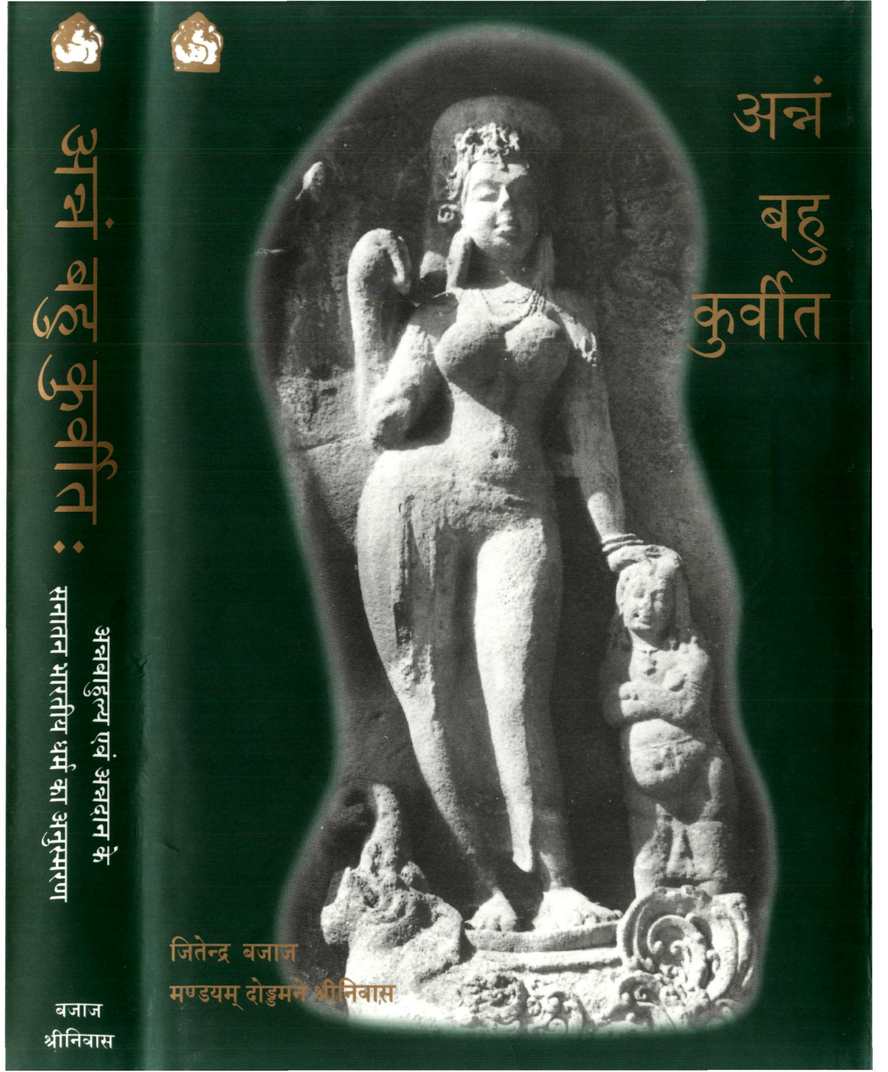

अन्नं बहु कुर्वीत

जितेन्द्र बजाज
मण्डयम् दोड्डमने श्रीनिवास

समाजनीति समीक्षण केन्द्र, मद्रास

राष्ट्रनिर्माण के कार्य में महत्त्व लोगों के उत्साह एवं निष्ठा का ही होता है। राष्ट्र के लोग जब आत्मविश्वास एवं दृढ सङ्कल्प के साथ अपने किसी लक्ष्य की ओर चल निकलते हैं तो उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिये समुचित साधनों, तकनीकों एवं व्यवस्थाओं आदि का सृजन तो वे सहज़ ही करते चले जाते हैं।

इस शती के पूर्वार्द्ध में महात्मा गान्धी ने भारतवर्ष में ऐसे ही दृढ सङ्कल्प एवं आत्मविश्वास का सञ्चार किया था और तब भारत के लोगों ने अपनी समस्त शक्ति को सहेजकर अपने-आप को स्वतन्त्रताप्राप्ति के महान् कार्य में लगा दिया था। उस सङ्कल्प एवं विश्वास के बल पर हम न केवल अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हुए, अपितु अपने उस अभूतपूर्व स्वतन्त्रता सङ्ग्राम को सम्पन्न कर हमने सम्पूर्ण विश्व को अनेक विलक्षण विचारों एवं विधाओं से समृद्ध किया।

स्वतन्त्रताप्राप्ति के पश्चात् हमने स्वतन्त्रता सङ्ग्राम के दिनों के उस दृढ सङ्कल्प एवं अविचल आत्मविश्वास को कहीं खो दिया है। दीर्घ राजनैतिक दासता ने हमें वैचारिक एवं व्यावहारिक तमस के गहन अन्धकार में धकेल दिया था। महात्मा गान्धी जैसे अवतार पुरुष के नेतृत्व में हम कुछ समय के लिये उस तमस से उबर पाये। उनके जाने के पश्चात् हम सहसा पुनः उसी तमस में डूब गये हैं। पिछले पचास वर्षों में हम सब प्रकार के ओज एवं उत्साह से विहीन जीवन ही जीते आये हैं। आज के विश्व में अपनी परिस्थिति को समझने और इस परिस्थिति में अपनी राष्ट्रीय अस्मिता को प्रतिष्ठापित करने के लिये आवश्यक उद्यम करने के विषय में हमने कोई विचार ही नहीं किया। अपनी सांस्कृतिक गरिमा के अनुरूप विश्व में अपना कोई स्थान बनाने और अपनी कोई स्वतन्त्र दिशा स्थापित करने का कोई प्रयास हम से नहीं हुआ। स्वतन्त्र राष्ट्रीय जीवन के इन पचास वर्षों में हम तो अन्यों का अनुकरण करते हुए किसी प्रकार समय ही काटते आये हैं। अन्तर्राष्ट्रीय हाट-बाज़ारों से उठने वाली विभिन्न झन्झाओं के समक्ष झुकते हुए, समय समय पर बह रही अन्तर्राष्ट्रीय पवन की दिशा के साथ अपने को घुमाते हुए, हम मात्र जीवनयापन ही करते आये हैं।

...शेष पृष्ठावरण पर

www.cpsindia.org